ये अव्यक्त इशारे

ईच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति का अनुभव करो और कराओ

13-09-2024

बेहद के विधाता के लिए यह हद की आशायें वा इच्छायें स्वयं ही परछाई के समान पीछे-पीछे चलती हैं। यह 5 तत्व भी आप विधाता के आगे दासी बन जाते हैं, आपके आगे यह हद की इच्छायें ऐसी हैं जैसे सूर्य के आगे दीपक। लेकिन चाहिए की तृप्ति का आधार है -जो चाहिए वह ज्यादा से ज्यादा देते जाओ। मान दो, रिगार्ड दो, रिगार्ड लो नहीं। नाम चाहिए तो बाप के नाम का दान दो तो आपका नाम स्वतः हो जायेगा। मांगने से मिले यह रास्ता ही रांग है तो मंजिल कहाँ से मिलेगी इसलिए मास्टर विधाता बनो तो सब इच्छायें पूरी हो जायेंगी।

Experience the stage of being ignorant of the knowledge of desires and give others this experience.

For an unlimited bestower of fortune, these limited hopes and desires follow like a shadow. Even the five elements become servants in front of you bestowers of fortune. In front of you, limited desires are like a lamp in front of the sun. However, in order to fulfil all needs, continue to give to the maximum extent whatever it is that you want. Give respect and give regard, do not ask for regard. If you want your name glorified, then give the donation of the Father's name and your name will automatically be glorified. When you receive something by asking for it, that is the wrong path. How would you then reach your destination? Therefore, become a master bestower of fortune and all your desires will be fulfilled.